

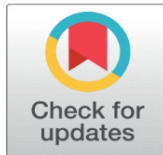
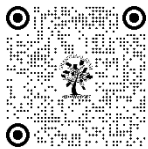
COMPARATIVE STUDY OF LEVELS OF EMOTIONAL INTELLIGENCE ON STUDY HABITS OF RESERVED CATEGORY STUDENTS

आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन

Mrs. Varsha Tiwari ¹, Dr. Rochana Shukla ²

¹ Research Scholar, Department of Education, Oriental University

² Assistant Professor, Department of Education, Oriental University



ABSTRACT

English: Education is a means of all types of development for everyone. Education is capable of all-round development of any child irrespective of his community. To strengthen that education, various types of habits have to be developed, such as making notes, physical health, mental health, time budget, re-study etc. The study done through this is strong and long-lasting. Emotional intelligence is helpful in providing a special place to the learner in the society, such as the ability of that person to identify, understand and manage his own and others' emotions etc. In this research, it has been decided to do a comparative study of the levels of emotional intelligence on the study habits of students of reserved category. In which a survey study was done on 150 Scheduled Caste, 150 Scheduled Tribe and 150 Other Backward Class students of Dhar district and Indore district.

The result of this research was that high level of emotional intelligence was found in backward class students, whereas emotional intelligence was found on low level of study habits in Scheduled Caste girls. And they have obtained the highest marks on an average level in all three categories. And the difference of emotional intelligence on the study habits of reserved category students is significant. A detailed description along with some other points has been done in this research.

Hindi: शिक्षा सभी के लिए सभी प्रकार के विकास के साधन के रूप में है। जिसमें कोई भी बालक किसी भी समुदाय विशेष का हो शिक्षा उसका सर्वतोन्मुखी विकास करने में सक्षम है। उस शिक्षा को दृढ़ीभूत करने के लिए विभिन्न प्रकार की आदतों को विकसित करना पड़ता है, जैसे नोट्स बनाना, शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य, समय बजट, पुनः अध्ययन आदि इससे किया गया अध्ययन दृढ़ और चिर कालिक होता है। संवेगात्मक बुद्धि अध्येता समाज में एक विशेष स्थान प्रदान करने में सहायक है, जैसे उस व्यक्ति की अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, और प्रबंधन करने की क्षमता आदि। इस शोध में आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन करना निश्चित किया गया है। जिसमें धार जिले एवं इंदौर जिले के 150 अनुसूचित जाति 150 अनुसूचित जनजाति एवं 150 अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्र-छात्राओं पर सर्वेक्षणआत्मक अध्ययन किया गया।

इस शोध से परिणाम निकला कि पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की संवेगात्मक बुद्धि अधिक पाई गई जबकि अनुसूचित जाति के छात्राओं में निम्न स्तर की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि पाई गई। और तीनों ही वर्गों में औसत स्तर पर सबसे अधिक प्राप्तांकों को प्राप्त किया है। और आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि का अन्तर सार्थक है। कतिपय अन्य बिन्दुओं के साथ सविस्तार वर्णन इस शोध में किया गया है।

Keywords: Reserved Category, Study Habits, Emotional Intelligence, Its Levels, आरक्षित वर्ग, अध्ययन आदतें, संवेगात्मक बुद्धि, उसके स्तर

DOI

10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5544

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.



1. प्रस्तावना

शिक्षा को अमृत प्राप्ति के सादृश्य' नीतिशास्त्र में स्वीकार किया गया। जो शिक्षा या ज्ञान से परोंमुख है, जिनमें न ज्ञान है, न तप है, न दान है, न विद्या है, न गुण है, न धर्म है। वे नश्वर संसार में पृथ्वी के बोझ हैं और मानव रूप में हिरण (पशु) की तरह घूमते हैं।

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मर्त्यलोके भुविभारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

शिक्षा किसी भी समाज के विकास और समृद्धि और गतिशीलता का आधार स्तंभ है। यह न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज में समानता, एकता, सौहार्द, प्रेम और न्याय के साथ जीवन को मुक्ति के पथ पर पूर्ण शान्ति और सुखद अनुभूति में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा को प्राप्त करने के लिए आराधक को कुछ अध्ययन के योग्य आदतों को विकसित करने के लिए भी ध्यान देना होता है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता न्यूनतम काल खर्चने पर अधिकतम उपलब्धि हो सके। इसलिए आधुनिक मनोविज्ञान ने भी अध्ययन की विशिष्ट आदतों के विकास पर अध्येताओं को परामर्श प्रदान किए हैं, उन अध्ययन आदतों को एक दृष्टि में अवलोकित करते हैं।

2. अध्ययन आदतों की परिभाषाएँ

1. गुड (1973)- अध्ययन आदतें वे तकनीकें हैं जो एक छात्र अपनी शैक्षणिक गतिविधियों के दौरान अपनाता है और जिनका उद्देश्य अधिक प्रभावी और कुशल अध्ययन है। इसमें समय प्रबंधन, नोट्स बनाना, समीक्षा, और एकाग्रता शामिल हैं।²

2. पोलॉक (1985)- अध्ययन आदतें किसी व्यक्ति के अध्ययन की विधियों और रीतियों का सेट होती हैं, जिसमें अध्ययन के लिए निर्धारित समय, अध्ययन के दौरान अपनाई जाने वाली रणनीतियाँ, और अध्ययन सामग्री की समीक्षा के तरीके शामिल हैं।³

3. सिंगर और टायलर (1997)- अध्ययन आदतें वे व्यवहार और तकनीकें हैं जो एक छात्र अध्ययन करते समय अपनाता है, जिससे उसे शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में मदद मिलती है। यह समय प्रबंधन, ध्यान केंद्रित करना, और योजना बनाना जैसी तकनीकों को शामिल करती हैं।⁴

4. ओजोनोगु (2013)- अध्ययन आदतें वे विशेष कार्यप्रणालियाँ हैं जो एक छात्र द्वारा अध्ययन करते समय अपनाई जाती हैं, जिनका उद्देश्य शैक्षणिक प्रदर्शन को अधिकतम करना होता है। इसमें नियमित अध्ययन, नोट्स बनाना, और पुनरावृत्ति शामिल हैं।⁵

² Good, T. L., & Brophy, J. E. (1973). **Educational Psychology: A Realistic Approach**. Holt, Rinehart, and Winston.

³ Pollock, J. E. (1985). **Classroom Instruction That Works: Research-based Strategies for Increasing Student Achievement**. ASCD.

⁴ Singer, S., & Tyler, C. (1997). **Learning and Study Strategies: Issues in Assessment, Instruction, and Evaluation**. Lawrence Erlbaum Associates.

⁵ Ozoemena, E. (2013). **Study Habits and Academic Performance of Students in Tertiary Institutions**. Journal of Educational Research.

इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि 'अध्ययन आदतें वे आदतें और व्यवहार हैं जो छात्र अध्ययन के दौरान अपनाते हैं। इसमें अध्ययन के लिए निर्धारित समय, अध्ययन सामग्री का संगठन, और अध्ययन के दौरान ध्यान केंद्रित करना शामिल है। विद्यार्थी अपनी शैक्षणिक गतिविधियों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए अपनाते हैं। इनमें समय प्रबंधन, नोट्स बनाना, पुनरावलोकन करना, अध्ययन सामग्री का सही उपयोग, और मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना शामिल है।

3. शिक्षा वृद्धि में अध्ययन आदतों का महत्व

1. समय प्रबंधन - समय प्रबंधन अध्ययन आदतों का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह विद्यार्थियों को अपने समय का सही उपयोग करने और सभी विषयों पर समान ध्यान देने में मदद करता है। जब विद्यार्थी अपने अध्ययन के लिए समय को सही ढंग से व्यवस्थित करते हैं, तो वे अधिक उत्पादक और कम तनावग्रस्त महसूस करते हैं। यह उन्हें अपनी शैक्षणिक जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने और बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

2. नोट्स बनाना - अध्ययन के दौरान नोट्स बनाना एक प्रभावी अध्ययन आदत है। यह न केवल महत्वपूर्ण जानकारी को संक्षिप्त रूप में रिकॉर्ड करने में मदद करता है, बल्कि याद रखने की क्षमता को भी बढ़ाता है। नोट्स बनाते समय विद्यार्थी अपनी समझ के अनुसार जानकारी को पुनः व्यवस्थित करते हैं, जिससे उनकी समझ और स्मृति दोनों में सुधार होता है।

3. पुनरावलोकन - नियमित पुनरावलोकन शिक्षा वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विद्यार्थियों को सीखे हुए सामग्री को याद रखने और समझने में मदद करता है। पुनरावलोकन से जानकारी को लंबे समय तक स्मृति में बनाए रखने की क्षमता बढ़ती है। यह विशेष रूप से परीक्षा की तैयारी के समय अत्यंत उपयोगी होता है।

4. अध्ययन सामग्री का सही उपयोग- अध्ययन सामग्री का सही उपयोग करना भी अध्ययन आदतों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह विद्यार्थियों को उपलब्ध संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग करने और आवश्यक जानकारी को आसानी से प्राप्त करने में मदद करता है। अध्ययन सामग्री में पुस्तकों, नोट्स, ऑनलाइन संसाधनों, और शिक्षकों द्वारा प्रदान की गई सामग्री शामिल है।

⁶ Roberts, A. (2015). Study Skills: Strategies for Taking Control of Your Learning. Pearson Education.

5. मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य- मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना शिक्षा वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्वस्थ मन और शरीर अध्ययन के लिए आवश्यक ऊर्जा और एकाग्रता प्रदान करते हैं। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, और पर्याप्त नींद विद्यार्थियों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं, जिससे उनकी अध्ययन क्षमता में सुधार होता है।

4. अध्ययन आदतों का विकास करने के उपाय

अध्ययन आदतों का विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें निरंतर प्रयास और सुधार की आवश्यकता होती है। नीचे कुछ रणनीतियाँ दी गई हैं, जो विद्यार्थियों को प्रभावी अध्ययन आदतों का विकास करने में मदद कर सकती हैं-

1. लक्ष्य निर्धारण- स्पष्ट और यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करना विद्यार्थियों को अपनी प्राथमिकताओं को पहचानने और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। लक्ष्य निर्धारण से अध्ययन की दिशा स्पष्ट होती है और विद्यार्थी अधिक संगठित और केंद्रित रहते हैं।

2. नियमितता - अध्ययन में नियमितता बनाए रखना महत्वपूर्ण है। नियमित अध्ययन आदतें विद्यार्थियों को समय प्रबंधन में मदद करती हैं और अध्ययन की प्रक्रिया को स्वाभाविक और आरामदायक बनाती हैं।

3. समय सारणी बनाना - एक समय सारणी बनाना विद्यार्थियों को अपने समय को व्यवस्थित करने और सभी विषयों पर समान ध्यान देने में मदद करता है। समय सारणी से अध्ययन की नियमितता बनी रहती है और विद्यार्थियों को सभी विषयों को कवर करने का समय मिलता है।

4. सक्रिय अध्ययन- सक्रिय अध्ययन तकनीकें जैसे कि चर्चा, प्रश्न पूछना, और स्वयं परीक्षण करना, विद्यार्थियों की समझ और स्मृति में सुधार करती हैं। यह तकनीकें विद्यार्थियों को अधिक गहराई से सोचने और सीखी गई जानकारी को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने में मदद करती हैं।

5. स्वयं मूल्यांकन- नियमित रूप से स्वयं का मूल्यांकन करना और अपनी प्रगति की समीक्षा करना महत्वपूर्ण है। इससे विद्यार्थियों को अपनी कमजोरियों को पहचानने और सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाने में मदद मिलती है।

6. सकारात्मक दृष्टिकोण - सकारात्मक दृष्टिकोण अध्ययन के प्रति विद्यार्थियों की रुचि और

उत्साह को बढ़ाता है। सकारात्मक दृष्टिकोण से विद्यार्थी कठिनाइयों का सामना करने और उन्हें पार करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं।

7. स्वास्थ्य - विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ता है। जिसके लिए उसे आवश्यक रूप से पर्याप्त नींद लेना, स्वस्थ आहार लेना, और नियमित व्यायाम करना अनिवार्य अंग के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

5. अध्ययन आदत और संवेगात्मक बुद्धि

अध्ययन आदतें और संवेगात्मक बुद्धि दो महत्वपूर्ण घटक हैं, जो एक व्यक्ति की शैक्षणिक सफलता और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अध्ययन आदतें किसी व्यक्ति की नियमित रूप से अध्ययन करने की आदतों और तकनीकों को दर्शाती हैं, जबकि संवेगात्मक बुद्धि उस व्यक्ति की अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने, और प्रबंधन करने की क्षमता को दर्शाती है। अतः संवेगात्मक बुद्धि और अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में कैसी भूमिका निभाती हैं। इसे जानने के लिए धार और इंदौर जिले के आरक्षित वर्ग से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और संवेगात्मक बुद्धि के स्तरों का तुलनात्मक अध्ययन करने के इस शोध को प्रस्तावित किया गया।

6. शोध का उद्देश्य

1. आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना-

1. आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता से कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध परिसीमन -

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य क्षेत्र की दृष्टि से मध्यप्रदेश के धार व इन्दौर जिले के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों तक ही सीमित है। शोध में प्रतिदर्श के रूप में 150 अनुसूचित वर्ग के विद्यार्थियों को 150 अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों को एवं 150 अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को लिया गया है। जो कि छात्र और छात्राओं में समान रूप से वर्गीकृत है। अध्ययन आदतों में मात्र छः अध्ययन आदतों को आधार मानकर अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध वर्णानात्मक शोध के अन्तर्गत आता है, एवं इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के प्रदत्तों को ग्रहण करने के लिए असंभाव्य प्रतिदर्श चयन विधि के अन्तर्गत सुविधा चयन विधि से 450 प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

7. शोधोपकरण एवं फलांकन

उद्देश्य के अनुरूप शोधोपकरण की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए उपयुक्त उपकरण नहीं मिला, जिसके लिए शोध निर्देशिका मेम के परामर्श पर उपकरण को तैयार कर उसकी वैद्यता विश्वसनीयता का निरूपण कर उसे प्रशासित किया गया। जिसमें कुल 30 वाक्यात्मक स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया। जिसमें विद्यार्थियों के अंक 0 से 30 के मध्य प्राप्तांक आने निर्धारित थे।

उसमें छात्रों एवं छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन को ज्ञात किया गया। पुनः मध्यमान में प्रमाणिक विचलन को जोड़कर उच्च संवेगिक बुद्धि को ज्ञात किया एवं मध्यमान में से मानक विचलन को घटाकर निम्न संवेगिक बुद्धि को ज्ञात किया और इसके मध्य में आने वाले सभी छात्र औसत संवेगिक बुद्धि की श्रेणी निर्मित की गई। जिसका विश्लेषण निम्न रूप में प्राप्त होता है।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों (छात्र-छात्राओं) की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के स्तरों का तुलनात्मक प्रतिशतीय विवेचन-

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों (छात्र और छात्राओं) की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के विभिन्न स्तरों पर आधारित यह शोध बिन्दु है। जिसमें सांवेगिक बुद्धि के तीनों स्तरों उच्च, औसत और निम्न स्तर का वर्णन तालिका क्र. 1 में प्रस्तुत किया जा रहा है।

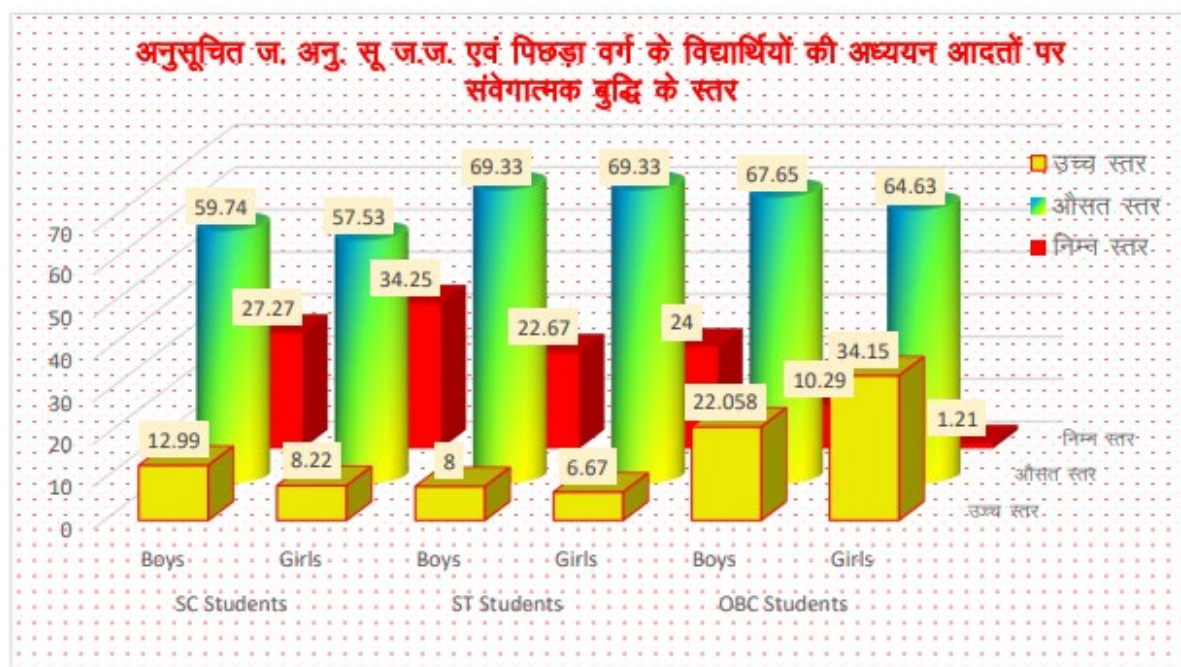
तालिका क्र. 1 अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों (छात्र और छात्राओं) की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के स्तर का प्रतिशतीय विवेचन-

स्तर	अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति		पिछड़ा वर्ग	
न्यादर्श संख्या	77	73	75	75	68	82
स्तर	छात्र प्रति.	छात्रा प्रति.	छात्र प्रति.	छात्रा प्रति.	छात्र प्रति.	छात्रा प्रति.
उच्च स्तर	12.99	8.22	8	6.67	22.058	34.15
औसत स्तर	59.74	57.53	69.33	69.33	67.65	64.63
निम्न स्तर	27.27	34.25	22.67	24	10.29	1.21
कुल	100	100	100	100	100	100

तालिका क्र. 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि तीनों ही श्रेणी के विद्यार्थियों अर्थात् छात्र और छात्राओं के सांवेगिक बुद्धि के स्तर का प्रतिशत सर्वाधिक औसत श्रेणी में ही प्राप्त होता है, लेकिन इस श्रेणी में सबसे अधिक अंक अनुसूचित जनजाति के छात्र और छात्राओं ने 69.33 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। इसके बाद पिछड़ा वर्ग के छात्रों ने और उसके बाद इसी वर्ग की छात्राओं ने प्राप्त किए हैं। औसत स्तर की श्रेणी में अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के प्राप्तांक सबसे कम हैं।

उच्च स्तर पर अध्ययन आदतों का संवेगिक बुद्धि के स्तर का प्रतिशत सर्वाधिक पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों ने ही प्राप्त किया है। उसके बाद अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों ने अर्जित किया है। और तृतीय स्थान पर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों ने प्राप्त किए हैं।

निम्न स्तर पर यदि देखा जाए तो सबसे अधिक अंक अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों ने प्राप्त किए हैं। उसके बाद अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के प्रतिशत प्राप्त होते हैं। और सबसे कम प्रतिशत पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों ने अर्जित किए हैं। इस विवेचन से इतना स्पष्ट हो गया है कि अध्ययन आदतों और संवेगात्मक बुद्धि के बीच एक मजबूत संबंध है। एक छात्र की संवेगात्मक बुद्धि उसकी अध्ययन आदतों को प्रभावित कर सकती है और इसके विपरीत भी सही है। जैसे कि समय प्रबंधन, आत्म-प्रबंधन, प्रेरणा, सक्रियता से अध्ययन को संवेगात्मक बुद्धि प्रेरणा एवं बढ़ावा देती है। इससे एक प्रेरित छात्र अधिक सक्रियता से पढ़ाई करता है, नोट्स लेता है, और अध्ययन सामग्री के प्रति उत्सुकता दिखाता है। इसी विवरण को आरेख क्र. 1 में प्रदर्शित किया जा रहा है। आरेख क्र. 10 अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों (छात्र और छात्राओं) की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के स्तर का विवेचन



आरेख क्र. 1 को देखने सा रूप में ज्ञात होता है कि अध्ययन आदतों और संवेगात्मक बुद्धि के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है जो शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले छात्र अपनी भावनाओं को बेहतर तरीके से प्रबंधित करते हैं, जिससे वे प्रभावी अध्ययन आदतें विकसित कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप, वे शैक्षणिक चुनौतियों का सामना अधिक सकारात्मक और प्रभावी तरीके से कर सकते हैं। छात्रों को दोनों क्षेत्रों में सुधार के लिए प्रोत्साहित करना उन्हें न केवल शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में मदद करेगा, बल्कि उन्हें एक संतुलित और सफल जीवन जीने के लिए भी तैयार करेगा।

8. परिकल्पना का सत्यापन

आरक्षित वर्ग (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति पिछड़ा वर्ग) के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए एफ परीक्षण लगाया गया जिसे तालिका क्र. 2 में दिखा गया है।

तालिका क्र. 2 शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य अशासकीय शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर सार्थक है, यह प्रदर्शित होता है।

प्रसरण का स्रोत	वर्ग योग (SS)	मुक्तांश (df)	माध्य वर्ग योग (MS)	F-अनुपात	सार्थकता 0.05 स्तर
बाह्य समूह	878.92	2	439.46	41.538	सार्थक
अन्तः समूह	4729.1	447	10.5796		

कुल	5608.02	449			
-----	---------	-----	--	--	--

तालिका संख्या: 2 में प्रस्तुत किए गये परिणाम से स्पष्ट है कि प्राप्त F-अनुपात का मान

41.538 सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थक है। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करते हुए यह निष्कर्ष निकलता है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता से सार्थकता पायी जाती है। कहने का तात्पर्य है कि यदि संवेगात्मक बुद्धि यदि अधिक होती है तो अध्ययन आदतें भी विशिष्ट होती जाती है एवं संवेगात्मक बुद्धि कम होती है तो अध्ययन आदतों पर प्रभाव भी दिखाई देता है। इसी परिकल्पना के आधार पर सभी वर्गों के भेद के आधार पर विशिष्ट अध्ययन तालिका क्र. 3 में किया गया है-

आरक्षित वर्ग (अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति पिछड़ा वर्ग) के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धिमत्ता से कोई सार्थक अंतर नहीं है।

चर	मध्यमान	कुल संख्या	मानक विचलन	मध्यमानों का अंतर	t मान	t तालिका मान 0.05	परिकल्पना का परिणाम
अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	15.46	150	3.542	-34	0.883	1.984	स्वीकृत
अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	15.8	150	3.103				
अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	15.46	150	3.542	-3.12	8.2	1.984	अस्वीकृत
पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी	18.58	150	3.091				
अनुसूचित जाति के विद्यार्थी	15.8	150	3.103	-2.78	8.2	1.984	अस्वीकृत
पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी	18.58	150	3.091				

तालिका क्र. 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों में से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव देखने के लिए टी परीक्षण परीक्षण लगाया गया। तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 1.984 है। दोनों का स्वतंत्रता का स्तर Degree of Freedom 299 है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.46 और मानक विचलन 3.542 आया है। अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.80 और मानक विचलन 3.103 आया है। दोनों मध्यमानों का अंतर -0.34 निकालने के बाद टी मूल्य 0.883 आया जो टी तालिका मान से बहुत कम होने के कारण शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है।

इसी तालिका का तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आरक्षित वर्ग अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव को देखने के लिए टी परीक्षण लगाया गया। तालिका मूल्य 0.05 स्तर पर 1.984 है। दोनों का स्वतंत्रता का स्तर Degree of Freedom 299 है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.46 और मानक विचलन 3.542 आया है। पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 18.58 और मानक विचलन 3.093 आया है। दोनों मध्यमानों का अंतर 3.12 निकालने के बाद टी मूल्य 8.20 आया जो टी तालिका मान से बहुत अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

इसी तालिका में अवलोकन करने अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 15.80 और मानक विचलन 3.103 आया है। पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का मध्यमान 18.58 और मानक विचलन 3.093 आया है। दोनों मध्यमानों का अंतर -2.78 निकालने के बाद टी मूल्य 7.97 आया जो टी तालिका मान से बहुत अधिक होने के कारण शून्य परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है।

9. निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया कि विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि के स्तरों में महत्वपूर्ण अंतर है। पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों में उच्च स्तर की संवेगात्मक बुद्धि अधिक पाई गई जबकि अनुसूचित जाति के छात्राओं में निम्न स्तर की अध्ययन आदतों पर

संवेगात्मक बुद्धि पाई गई। और तीनों ही वर्गों में औसत स्तर पर सबसे अधिक प्राप्तांकों को प्राप्त किया है। और आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर संवेगात्मक बुद्धि का अन्तर सार्थक है, ऐसा अभिप्राय निकलता है।

10.सुझाव

विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम - अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए संवेगात्मक बुद्धि में सुधार हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। सभी विद्यार्थियों को इस बात से अवगत कराया जाना चाहिए कि अच्छी अध्ययन आदतें विकसित करें।

सहयोगात्मक अध्ययन- सभी वर्गों के विद्यार्थियों को मिलकर समूह में अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि वे एक-दूसरे से सीख सकें, सहयोग ले सकें एवं अन्य का सहयोग कर सकें। इससे उनकी अध्ययन आदतें तो विकसित होंगी ही साथ में संवेगात्मक बुद्धिमत्ता भी विकसित होगी।

मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं - विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए परामर्श और सहयोग सेवाएं प्रदान की जानी चाहिए। अध्ययन आदतों के लिए प्रेरणात्मक व्याख्यानों को आयोजन किया जाना चाहिए।

REFERENCES

- सिंह, अरूण कुमार (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पीएच.डी. पटना.
- हरलाक, ई.वी. (1979). डेवलपमेंटल साइकोलाजी, टी.एम. एवं पब्लिकेशन, नई दिल्ली.
- आई.ए., गेट्स एवं जरसील (1958). शिक्षा मनोविज्ञान, न्यूयार्क.
- कपिल, एच.के. (2009), सांख्यिकीय के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
- पाठक, पी.डी. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
- मंगल, एस.के. (2010). शिक्षा मनोविज्ञान पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.
- भटनागर, सुरेश (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
- काशीनाथ, एच. एम. (2003). एडजस्टमेंट कम्पोनेंट ऑफ स्टूडेंट्स स्टडींग इन जवाहर नवोदय विद्यालय, ए कलस्टर एनालिसिस, जनरल ऑफ कम्प्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च 20(3), पृ. 295-304.
- Good, T. L., & Brophy, J. E. (1973). Educational Psychology: A Realistic Approach. Holt, Rinehart, and Winston.
- Pollock, J. E. (1985). Classroom Instruction That Works: Research-based Strategies for Increasing Student Achievement. ASCD.
- Singer, S., & Tyler, C. (1997). Learning and Study Strategies: Issues in Assessment, Instruction, and Evaluation. Lawrence Erlbaum Associates.
- Ozoemena, E. (2013). Study Habits and Academic Performance of Students in Tertiary Institutions. Journal of Educational Research.
- Roberts, A. (2015). Study Skills: Strategies for Taking Control of Your Learning. Pearson Education